Azaan Ki Barkaten (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 182
Weekly Booklet : 182

अज़ान की बरकतें

- ज़ालिम अफ़सर का इबरत नाक अन्जाम 01
- सब से पहली अज़ान किस ने दी ? 08
- अज़ान अम्नो सलामती का सबब है 16
- अज़ान के चन्द शरई मसाइल 23

जा नशीने अमीरे अहले सुन्नत, हज़रत मौलाना उ़बैद रज़ा अ़त्तारी मदनी مدظلہ العالی के 18 रबीउ़ल आख़िर 1442 मुत़ाबिक़ 3 दिसम्बर 2020 को मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में होने वाले हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ के बयान का इज़ाफ़े के साथ तहरीरी गुलदस्ता

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **दीनी** किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**अज़ान की बरकतें**"

मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 98987 32611 • Email : hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

अज़ान की बरकतें

दुआए अ़त्तार

या अल्लाह पाक ! जो कोई 25 सफ़ह़ात का रिसाला **''अज़ान की बरकतें''** पढ़ या सुन ले उसे मुअज़्ज़िने रसूल ह़ज़रते बिलाल का जन्नतुल फ़िरदौस में पड़ोस अ़त़ा फ़रमा। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह करीम के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे रह़मत बुन्याद है : जिस ने क़ुरआने करीम पढ़ा, **अल्लाह** पाक की ह़म्द की और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़ा नीज़ अपने रब से मग़्फ़िरत त़लब की तो उस ने भलाई को अपनी जगह से तलाश कर लिया। (شعب الایمان، 2/373، حدیث:2084)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

ज़ालिम अफ़्सर का इ़ब्रत नाक अन्जाम (ह़िकायत)

एक ताजिर (बिज़्नस मेन) का किसी गवर्नमेन्ट के अफ़्सर पर बहुत सा माल क़र्ज़ था। वोह जब भी मुत़ालबा करता, अफ़्सर ह़ीले बहाने कर के ताजिर को वापस भेज देता। ताजिर ने जब देखा कि मेरा माल किसी त़रीक़े से नहीं मिल रहा तो उस ने उस से बड़े ऑफ़ीसर्ज़ बल्कि वज़ीर से भी सिफ़ारिश करवाई, लेकिन उस का माल वापस न मिला। अब सिर्फ़ ख़लीफ़ए वक़्त तक शिकायत पहुंचाना बाक़ी थी, लेकिन येह

आसान काम न था। एक दिन उस ताजिर के एक दोस्त ने कहा : आओ ! मेरे साथ चलो, मैं तुम्हें एक ऐसे शख़्स के पास ले चलता हूं जो तुम्हारा माल वापस दिलवा देगा और तुम्हें ख़लीफ़ा के पास शिकायत करने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। फिर वोह मुझे एक दरज़ी (टेलर) के पास ले गया जो क़रीबी मस्जिद में "इमाम" भी थे। मेरे दोस्त ने मेरी परेशानी उन्हें बताई, तो इमाम साहिब फ़ौरन हमारे साथ अफ़्सर के घर की त़रफ़ चल पड़े, ताजिर ने अपने दोस्त से कहा : तुम ने मुझे, अपने आप को और इस ग़रीब दरज़ी को मुश्किल में डाल दिया है। वोह ज़ालिम अफ़्सर तो बड़े बड़े लोगों की बातों पर कान नहीं धरता, वज़ीर की सिफ़ारिश से भी नहीं डरा, फिर भला इस ग़रीब दरज़ी की बात को वोह क्या अहम्मिय्यत देगा ? मेरे दोस्त ने मुस्कुराते हुए कहा : तुम ख़ामोशी से देखते रहो कि होता क्या है ? जैसे ही हम उस ज़ालिम अफ़्सर के घर पहुंचे तो उस के ग़ुलामों ने बड़े बा अदब त़रीक़े से आगे बढ़ कर दरज़ी का हाथ चूमते हुए पूछा : आ़लीजाह ! आप की तशरीफ़ आवरी का क्या मक़्सद है ? हमारा मालिक अभी अभी सफ़र से आया है अगर आप हुक्म दें तो हम फ़ौरन उसे बुला लेते हैं और अगर आप चाहें तो अन्दर तशरीफ़ ले चलें और ख़िदमत का मौक़अ़ दें। अन्दर चल कर हम एक ख़ूब सूरत कमरे में बैठ गए। कुछ देर बा'द वोह अफ़्सर आया और दरज़ी को देखते ही इ़ज़्ज़तो एह़तिराम करते हुए बड़े अदब के साथ बोला : "हुज़ूर ! अभी अभी सफ़र से वापसी हुई है मैं उस वक़्त तक सफ़र के कपड़े तब्दील नहीं करूंगा जब तक आप के आने का मक़्सद पूरा न कर दूं, हुक्म फ़रमाएं मैं आप की क्या ख़िदमत कर सकता हूं ?" इमाम साहिब ने मेरी त़रफ़ इशारा करते हुए

फ़रमाया : फ़ौरन इस का माल इसे दे दो। अफ़्सर ने कहा : आ़लीजाह ! इस वक़्त मेरे पास सिर्फ़ पांच हज़ार (5000) दिरहम हैं, आप इस से फ़रमाइये कि फ़िलहाल येही रक़म क़बूल कर ले और बक़िय्या रक़म के बदले मेरा सामाने तिजारत गिरवी रख ले, मैं एक महीने के अन्दर अन्दर इस की रक़म वापस कर दूंगा। दरज़ी (इमाम साहिब) ने मेरी त़रफ़ देखा तो मैं ने फ़ौरन येह शर्त़ क़बूल कर ली। फिर हम वापस आ गए। मैं अपना ह़क़ मिलने पर बहुत ख़ुश था और ह़ैरान भी था कि न जाने इन इमाम साहिब में ऐसी कौन सी त़ाक़त है जिस की वज्ह से ज़ालिम अफ़्सर इतना मेह्रबान हो गया और इस क़दर एह़तिराम से पेश आया। वापसी पर मैं ने इमाम साहिब की दुकान पर अपना सारा माल रखते हुए अ़र्ज़ किया : **अल्लाह** पाक ने आप की बरकत से मुझे मेरा माल वापस दिलवा दिया है, मैं अपनी ख़ुशी से कुछ माल आप को तोह़फ़े में देना चाहता हूं, आप इस में से तिहाई (वन थर्ड) या आधा क़बूल कर लें। इमाम साहिब ने कहा : मैं इस में से कुछ भी नहीं लूंगा। जाओ ! **अल्लाह** पाक तुम्हें बरकत दे। मैं ने कहा : हुज़ूर ! मुझे आप से एक और काम भी है। उन्हों ने फ़रमाया : बताओ। मैं ने कहा : इस ज़ालिम अफ़्सर के सामने बड़े बड़े लोग बेबस हो गए, लेकिन आप की बात इस ने फ़ौरन मान ली, आख़िर वोह आप की इतनी इ़ज़्ज़त क्यूं करता है ? इमाम साहिब ने फ़रमाया : तुम्हारा माल तुम्हें मिल चुका है, जाओ ! अब अपना काम करो और मुझे भी काम करने दो। मैं ने जब बहुत इसरार किया तो इमाम साहिब ने अपना वाक़िआ़ कुछ यूं बयान किया कि मैं इस मस्जिद में चालीस साल से लोगों को नमाज़ पढ़ा रहा हूं और साथ में दरज़ी का काम करता हूं। हमारे घर के रास्ते में

एक अफ़्सर का घर है। एक मरतबा जब मैं अपने घर जा रहा था तो देखा कि नशे में बद मस्त वोह अफ़्सर एक औ़रत को पकड़ कर अपने घर की जानिब खींच रहा था, वोह बेचारी मदद के लिये पुकारती रही, लेकिन कोई भी उस की मदद को न आया। वोह रो रो कर कह रही थी : मेरे शौहर ने क़सम खाई है कि अगर मैं ने उस के घर के इ़लावा कहीं और रात गुज़ारी तो वोह मुझे त़लाक़ दे देगा। अगर येह ज़ालिम मुझे अपने घर ले गया तो मेरा घर बरबाद हो जाएगा और मैं रुस्वा हो जाऊंगी, ख़ुदा के लिये मुझे इस ज़ालिम से नजात दिलाओ। मैं जज़्बए ईमानी की बदौलत उस ज़ालिम की त़रफ़ बढ़ा और औ़रत को छोड़ने के लिये कहा तो उस ने एक लोहे का डन्डा मेरे सर पर मारा और थप्पड़ मार कर भगा दिया, मैं ज़ख़्मी ह़ालत में ग़मगीन व परेशान अपने घर आया ज़ख़्म से ख़ून धो कर पट्टी बांधी और कुछ देर बिस्तर पर लेट गया। फिर इ़शा की नमाज़ पढ़ने मस्जिद गया और नमाज़ के बा'द तमाम नमाज़ियों को उस ज़ालिम अफ़्सर की येह ह़रकत बताते हुए कहा : तुम सब मेरे साथ चलो ! या तो वोह औ़रत को छोड़ देगा वरना हम उस का मुक़ाबला करेंगे। लोगों ने मेरी ताईद की और हम उस के घर की जानिब चल दिये। वहां पहुंच कर हम ने औ़रत की रिहाई का मुत़ालबा किया तो उस ज़ालिम अफ़्सर के कई ग़ुलामों ने मिल कर हम पर डन्डों से ह़म्ला किया, सब मुझे अकेला छोड़ कर भाग गए, चन्द ग़ुलामों ने मुझे पकड़ कर ख़ूब मारा और शदीद ज़ख़्मी कर दिया। मेरा एक पड़ोसी मुझे उठा कर घर ले आया। घर वालों ने ज़ख़्मों पर दवा लगा कर पट्टी बांध दी, मुझे कुछ देर नींद आ गई, लेकिन कुछ ही देर बा'द दर्द की शिद्दत से आंख खुल गई। मैं सोच रहा था कि

उस बेचारी को किस त़रह़ बचाया जाए, कहीं उस का घर बरबाद न हो जाए। फिर अचानक मुझे ख़याल आया कि उस ज़ालिम ने शराब पी हुई है उसे वक़्त का भी पता नहीं, अगर मैं अभी अज़ान दे दूं तो वोह येही समझेगा कि फ़ज्र का वक़्त हो गया है और वोह उस औ़रत को छोड़ देगा। इस त़रह़ कम अज़ कम उस बेचारी का घर बच जाएगा। बस येह ख़याल आते ही मैं गिरता पड़ता मस्जिद पहुंचा और मीनारे पर चढ़ कर बुलन्द आवाज़ से अज़ान दी और उस ज़ालिम अफ़्सर के घर की त़रफ़ देखने लगा। अभी कुछ देर ही गुज़री थी कि सड़क घोड़ों और सिपाहियों से भर गई। सिपाही बुलन्द आवाज़ से कह रहे थे : इस वक़्त अज़ान किस ने दी है ? पहले तो मैं ख़ामोश रहा फिर येह सोच कर कि शायद उस औ़रत की रिहाई पर येह सिपाही मेरी मदद करें, मैं ने कहा : मैं ने दी है। सिपाहियों ने कहा : जल्दी नीचे आओ, तुम्हें ''ख़लीफ़ा'' ने याद किया है। सिपाही मुझे ख़लीफ़ा के पास ले गए। ख़लीफ़ा ने बड़ी शफ़्क़त से मुझे अपने क़रीब बिठाया और तसल्ली देने लगा, यहां तक कि मेरा ख़ौफ़ ख़त्म हो गया और मैं बिल्कुल मुत्मइन हो गया तो उस ने मुझ से कहा : तुझे किस ने मजबूर किया कि तू वक़्त से पहले अज़ान दे कर मुसल्मानों को धोका दे ? ज़रा सोच तो सही कि मुसाफ़िर तेरी अज़ान से धोका खा कर सफ़र शुरूअ़ कर देंगे, रोज़ेदार खाने पीने से रुक जाएंगे ह़ालां कि अभी सह़री का वक़्त बाक़ी है। मैं ने डरते हुए कहा : अगर आप मुझे जान की अमान दें तो मैं कुछ अ़र्ज़ करूं ? ख़लीफ़ा ने कहा : तुम्हें अमान दी जाती है, बताओ। फिर मैं ने उस ज़ालिम अफ़्सर और औ़रत का सारा वाक़िआ़ ख़लीफ़ा को सुनाया और अपने ज़ख़्म भी दिखाए। ख़लीफ़ा ने

गुस्से में आ कर सिपाहियों को हुक्म दिया कि अभी अभी उस अफ़्सर और उस मज़्लूमा औ़रत को मेरे सामने ह़ाज़िर करो। कुछ ही देर में सिपाही उस अफ़्सर और औ़रत को ख़लीफ़ा के पास ले आए। ख़लीफ़ा ने मुझे एक कमरे में भेज कर औ़रत से ह़क़ीक़ते ह़ाल पूछी तो उस ने भी वोही कुछ बताया जो मैं ने बताया था। ख़लीफ़ा ने चन्द क़ाबिले ए'तिमाद औ़रतों और सिपाहियों के साथ औ़रत को उस के घर भेज दिया। फिर ख़लीफ़ा ने मुझे बुलाया और उस अफ़्सर से पूछा : बता ! तुझे कितनी तनख़्वाह मिलती है ? बता ! तुझे कारोबार से कितना नफ़्अ़ मिलता है ? तेरे पास कितनी कनीज़ें हैं ? तेरी सालाना आमदनी कितनी है ? ज़ालिम अफ़्सर ने अपनी कसीर आमदनी और कनीज़ों के बारे में बताया तो ख़लीफ़ा ने कहा : इतनी ने'मतें मिलने के बा वुजूद तू ने अपने पाक परवर्दगार, ख़ुदाए क़ह्हारो जब्बार की ना फ़रमानी की है। क्या तुझे ह़लाल चीज़ें काफ़ी न थीं ? जो तू ने ह़राम की त़रफ़ हाथ बढ़ाया। अब तुझे दर्दनाक सज़ा दी जाएगी। फिर ख़लीफ़ा के हुक्म से वोह अफ़्सर बड़ी इ़ब्रत की मौत मार दिया गया। इमाम साह़िब ने फ़रमाया : तमाम अफ़्सर, वुज़रा येह मन्ज़र देख रहे थे। वोह अफ़्सर जिस के ज़िम्मे तेरा माल था वोह भी वहां मौजूद था। ख़लीफ़ा ने मुझे मुख़ात़ब कर के कहा : ऐ शैख़ ! हमारे इस मुल्क में आप जहां भी कोई बुराई देखें, जहां किसी ज़ालिम को ज़ुल्म करता देखें तो उसे रोकें, चाहे वोह कोई भी हो। फिर एक बड़े अफ़्सर की त़रफ़ इशारा कर के कहा : चाहे येह आ'ला अफ़्सर ही क्यूं न हो और अगर कोई तुम्हारे ख़िलाफ़ जुर्अत करे, तुम्हारी बात न माने तो मुझे फ़ौरन इत्तिलाअ़ कर देना, हमारे और तुम्हारे दरमियान

"अज़ान" निशानी होगी। तुम वक़्त से पहले अज़ान दे देना मैं समझ जाऊंगा और तेरी आवाज़ सुनते ही तेरी मदद को पहुंचूंगा। सुब्ह होते ही येह ख़बर पूरे शहर में फैल गई हर ख़ासो आ़म को मेरे इख़्तियारात के मुतअ़ल्लिक़ मा'लूम हो गया उस दिन से ले कर आज तक एक मरतबा भी ऐसा न हुवा कि मैं ने किसी को इन्साफ़ दिलवाया हो और उसे इन्साफ़ न मिला हो। ख़लीफ़ा के डर से हर शख़्स मेरी हर बात फ़ौरन मान लेता है। अभी तक दोबारा वक़्त से पहले अज़ान देने की नौबत नहीं आई। येह कह कर दरज़ी अपने काम में मसरूफ़ हो गया और मैं घर चला आया।

(उ़यूनुल ह़िकायात, 2/385)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ? ज़ुल्म का अन्जाम किस क़दर भयानक है। बुख़ारी शरीफ़ में है : फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : बेशक **अल्लाह** पाक ज़ालिम को मोहलत देता है यहां तक कि जब उस को अपनी पकड़ में लेता है तो फिर उस को नहीं छोड़ता। येह फ़रमा कर सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पारह 12 **सूरए हूद** की आयत 102 तिलावत फ़रमाई :

وَ كَذٰلِكَ اَخْذُ رَبِّكَ اِذَاۤ اَخَذَ الْقُرٰى وَ هِیَ ظَالِمَةٌؕ اِنَّ اَخْذَهٗۤ اَلِیْمٌ شَدِیْدٌ ﴿۱۰۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और ऐसी ही पकड़ है तेरे रब की, जब बस्तियों को पकड़ता है उन के ज़ुल्म पर बेशक उस की पकड़ दर्दनाक करीं (सख़्त) है।

हमेशा हाथ भलाई के वासित़े उठ्ठें *बचाना ज़ुल्मो सितम से मुझे सदा या रब*

प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस वाक़िए़ से जहां ज़ालिम के ज़ुल्म के इ़ब्रत नाक अन्जाम का पता चला वहीं "अज़ान" की बरकत से न सिर्फ़ ज़ुल्म का भी ख़ातिमा हुवा बल्कि अज़ान की बरकत से एक आ़म

से शख़्स की बादशाहे वक़्त तक न सिर्फ़ रसाई हो गई बल्कि इतना बड़ा इख़्तियार मिल गया कि वोह मुल्क से जराइम को ख़त्म कर दे।

सब से पहली अज़ान किस ने दी ?

अज़ान का लुग़वी मा'ना है : ख़बरदार करना। क्या आप जानते हैं कि सब से पहली "अज़ान" किस ने दी ? चलिये मैं बताता हूं, ह़ज़रते जिब्रीले अमीन (عَلَيْهِ السَّلَام) ने मे'राज की रात बैतुल मुक़द्दस में (सब से पहली अज़ान) दी, जब हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने सारे नबियों को नमाज़ पढ़ाई, मगर मुसल्मानों में हिजरत के बा'द पहली हिजरी में शुरूअ़ हुई।

(मिरआत, 1/399)

सरकार ने एक बार अज़ान दी

नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सफ़र में एक बार अज़ान दी थी और कलिमाते शहादत यूं कहे : اَشْهَدُ اَنِّیْ رَسُوْلُ اللّٰه "मैं गवाही देता हूं कि मैं **अल्लाह** का रसूल हूं"। (फ़तावा रज़विय्या, 5/375)

मनारे पर सब से पहले अज़ान देने वाले

शह्र में मनारे पर चढ़ कर अज़ान कहने वाले सब से पहले ह़ज़रते शुरह़बील बिन आ़मिर मुरादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه थे।" (الحدیقۃ الندیہ، 1/135)

घबराहट में अज़ान

रिवायत में है : जब आदम (عَلَيْهِ السَّلَام) हिन्दूस्तान में उतरे उन्हें घबराहट हुई तो जिब्रील (عَلَيْهِ السَّلَام) ने उतर कर अज़ान दी।

(حلیۃ الاولیاء، 5/123، حدیث:6566)

ज़िक्रे इलाही नुज़ूले रह़मत का बाइ़स है

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : अज़ान ज़िक्रे इलाही है और ज़िक्रे इलाही बाइ़से नुज़ूले रह़मत है। (फ़तावा रज़विय्या, 5/370 मुल्तक़त़न)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन जब **अल्लाह** पाक की रह़मत नाज़िल होगी तो बलाएं, आफ़तें, मुसीबतें, बीमारियां, परेशानियां दूर होंगी। चुनान्चे ह़दीसे पाक में है : **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللهُ عَنْه से इर्शाद फ़रमाया : ऐ अ़ली ! मैं तुझे ग़मगीन पाता हूं अपने किसी घर वाले से कह कि तेरे कान में अज़ान कहे, अज़ान ग़म व परेशानी दूर करती है। (جامع الاحادیث، 15/339 حدیث:6017) येह रिवायत नक़्ल करने के बा'द आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه "फ़तावा रज़विय्या शरीफ़" जिल्द 5 सफ़ह़ा 668 पर फ़रमाते हैं : मौला अ़ली (رَضِیَ اللهُ عَنْه) और मौला अ़ली तक जिस क़दर इस ह़दीस के रावी (या'नी रिवायत नक़्ल करने वाले) हैं सब ने फ़रमाया : فَجَرَّبْتُهُ فَوَجَدْتُّهُ (हम ने इसे तजरिबा किया तो ऐसा ही पाया)।

क्या अज़ान नमाज़ के साथ ख़ास है ?

बा'ज़ लोग येह समझते हैं कि अज़ान सिर्फ़ नमाज़ ही के लिये दी जा सकती है इस के इ़लावा किसी और मौक़अ़ पर नहीं दी जा सकती, येह बात दुरुस्त नहीं, अभी जो रिवायत बयान हुई कि ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام जन्नत से ज़मीन पर तशरीफ़ लाए तो उन की घबराहट व बेचैनी को दूर करने के लिये ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने जो अज़ान दी वोह किसी नमाज़ के लिये नहीं थी यूंही **अल्लाह** पाक के प्यारे नबी,

मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जो मौला अ़ली मुश्किल कुशा رَضِیَ اللهُ عَنْه को ग़मज़दा देख कर फ़रमाया कि "अपने किसी घर वाले से कह कि तेरे कान में अज़ान दे।" येह अज़ान भी किसी नमाज़ के लिये नहीं थी। नीज़ कुतुबे शाफ़िइय्या में नमाज़ के इ़लावा मुत़्लक़न इन मवाक़ेअ़ पर अज़ान कहना सुन्नत है। (تحفۃ المحتاج لابن حجر ہیتمی، 1/165)

नमाज़ के इ़लावा अज़ान के चन्द मवाक़ेअ़

अज़ान की अस्ल वज़्अ़ (ईजाद) तो नमाज़ ही के लिये थी फिर दूसरे मवाक़ेअ़ पर भी इस्ति'माल हुई। याद रहे इस्लाम ने कई मवाकेअ़ पर अज़ान देना मुस्तह़सन (या'नी पसन्द फ़रमाया) है उन में से चन्द येह हैं : (1) बच्चे के पैदा होने पर दाएं कान में अज़ान और बाएं में इक़ामत मस्नून हुई, (2) जहां जिन्नात का असर हो वहां भी अज़ान दी जाती है, (3) जब सुवारी का जानवर सरकशी करे (4 ता 7) बद मिज़ाज आदमी या जानवर के कान में, ग़मज़दा, मिर्गी के मरीज़ और ग़ुस्से वाले शख़्स के कान में (8) आतश ज़दगी के वक़्त (9) रास्ता भटक जाने की सूरत में (10) वबा (या'नी बीमारी) के ज़माने में (11) दफ़्ने मय्यित के बा'द।

(नुज़्हतुल क़ारी, 2/296, बहारे शरीअ़त, 1/466, हिस्सा : 3)

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने अज़ान के मवाक़ेअ़ को अ़रबी शे'र में यूं बयान फ़रमाया है जिस को ज़बानी याद कर लेने से अज़ान के येह मवाक़ेअ़ याद रखना आसान हो सकता है।

فَرْضُ الصَّلٰوةِ وَ فِیْ اُذُنِ الصَّغِیْرِ وَفِیْ   وَقْتِ الْحَرِیْقِ وَالْحَرْبِ الَّذِیْ وَقَعَا
خَلْفَ الْمُسَافِرِ وَالْغِیْلَانِ اِنْ ظَهَرَتْ   فَاحْفَظْ لِسِتٍّ مِنَ الَّذِیْ قَدْ شَرَعَا
وَزِیْدَ اَرْبَعٌ ذُوْهَمٍّ وَ ذُوْغَضَبٍ   مُسَافِرٌ ضَلَّ فِیْ نَفْرٍ وَ مَنْ صَرَعَا

फ़र्ज़ नमाज़ के लिये, बच्चे के कान में, आग लगने के वक़्त, सख़्त जंग हो, मुसाफ़िर के जाने के बा'द, जिन्नात के ज़ाहिर होने पर, ग़ुस्से वाले पर, रास्ता भूल जाने वाले के लिये और मिर्गी वाले के लिये। (जाअल हक़, स. 252)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

कोरोना वायरस के मरीज़ों से इज़्हारे हमदर्दी

प्यारे इस्लामी भाइयो ! पिछले चन्द माह से हिन्दुस्तान समेत दुन्या के कई ममालिक में एक मूज़ी बीमारी "कोरोना वायरस" ने ख़ौफ़ो हिरास फैला रखा है, अब तक जितने आ़शिक़ाने रसूल कोरोना वायरस के सबब फ़ौत हुए **अल्लाह** पाक तमाम आ़शिक़ाने रसूल की बे हिसाब बख़्शिश फ़रमाए और इन के घर वालों को सब्र और सब्र पर बेहतरीन अज्र अ़ता फ़रमाए। **अल्लाह** पाक की बारगाह में दुआ़ है कि कोरोना वायरस से मुतअस्सिर होने वाले जितने आ़शिक़ाने रसूल दुन्या में जहां कहीं हस्पतालों, घरों वग़ैरा में बन्द (कोरन्टाइन) हो कर रह गए हैं उन के ह़ाल पर भी नज़रे रह़मत फ़रमाए और उन को नेकियों वाली, इबादतों वाली, रियाज़तों वाली औरे दा'वते इस्लामी के दीनी कामों वाली लम्बी उ़म्र अ़ता फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللهُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

अमीरे अहले सुन्नत का उ़लमाए अहले सुन्नत के हुक्म पर त़र्ज़े अ़मल

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने 29 रजबुल मुरज्जब 1441 हि. को कुछ यूं ए'लान फ़रमाया कि : उम्मत की भलाई और कोरोना वायरस दूर हो जाने के लिये उ़लमाए अहले सुन्नत ने रात दस बजे घरों में अज़ान देने का हुक्म फ़रमाया है, मैं भी

निय्यत करता हूं कि اِنْ شَآءَاللّٰه ! रोज़ाना अज़ान दूंगा, दुन्या भर में रहने वाले आ़शिक़ाने रसूल (वहां के ह़ालातो वाक़िआ़त को पेशे नज़र रखते हुए) अपने घरों में अज़ान दें, اَلْحَمْدُلِلّٰه ! अज़ान की आवाज़ जहां तक पहुंचती है हर चीज़ मग़्फ़िरत की दुआ़ करती है, अज़ान से **अल्लाहु** रब्बुल इ़ज़्ज़त की रह़मत उतरती, आफ़तें और वबाएं दूर होती, शयात़ीन व शरीर जिन्नात दफ़्अ़ होते हैं, रन्जो ग़म दूर होता, घबराहट ख़त्म होती और दिलों को राह़त नसीब होती है। रात को या किसी भी ऐसे वक़्त में जिस से सुनने वाले को नमाज़ के लिये अज़ान का शक न हो, घरों में किसी सोते, नमाज़ी या मरीज़ वग़ैरा की ईज़ा न हो इस का ख़याल रखते हुए जहां हों वहां से मसलन घर, दुकान, दफ़्तर, फ़ेक्टरी वग़ैरा से और मुअज़्ज़िन साहिबान अपनी अपनी मस्जिदों से बा वुज़ू क़िब्ला रू खड़े हो कर दुरूदो सलाम पढ़ कर अज़ान देने की सआ़दत ह़ासिल करें कि **अल्लाह** पाक इस की बरकत से कोरोना वायरस और दीगर आफ़ातो बलिय्यात से अपने मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुख्यारी उम्मत को नजात बख़्शे।

ज़माने के मसाइब ने इलाही घेर रखा है पए शाहे मदीना दूर हों रन्जो अलम मौला
रसूले पाक की दुख्यारी उम्मत पर इनायत कर मरीज़ों, ग़मज़दों, आफ़त नसीबों पर करम मौला

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

परेशानी से नजात के लिये अज़ान देना सुन्नत है

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुसीबतो परेशानी से छुटकारे के लिये अज़ान देना सुन्नत है। (मिरक़ात, 2/330)

कोरोना वायरस के फैलने के वक़्त इस मुसीबतो परेशानी के आ़लम में भी ख़ूब अज़ानें दीजिये, क्या बईद ! इस ज़िक्रे इलाही के सबब

ऐसी रह़मते इलाही बरसे, ऐसी रह़मते इलाही बरसे, ऐसी रह़मते इलाही बरसे कि सिर्फ़ कोरोना वायरस ही नहीं बल्कि कोरोना अपने साथ कई और बीमारियों को ले कर हम से दूर हो जाए।

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 23 में एक सुवाल हुवा, मैं वोह सुवाल और जवाब आसान अल्फ़ाज़ में बयान करता हूं।

सुवाल : उ़लमाए दीन इस मस्अले के बारे में क्या फ़रमाते हैं कि लोग बीमारी व बलाओं के फैलने के वक़्त और आंधी व शदीद तूफ़ान वग़ैरा के वक़्त अज़ान कहते हैं, येह काम शर्अ़न जाइज़ है या नहीं ?

जवाब : जाइज़ है और जाइज़ होने के लिये ह़दीसे पाक में है : ज़िक्रे इलाही से ज़ियादा कोई शै **अल्लाह** पाक के अ़ज़ाब से छुड़ाने वाली नहीं। फिर जब तुम अ़ज़ाब देखो तो उस ह़ालत में **अल्लाह** पाक के ज़िक्र के ज़रीए पनाह ह़ासिल करो।

और क़ुरआने करीम में इर्शाद होता है :

اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَىٕنُّ الْقُلُوْبُ ﴿۲۸﴾

(پ13، الرعد:28)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : सुन लो **अल्लाह** की याद ही में दिलों का चैन है।

(फ़तावा रज़विय्या, 23/174)

हर सू हों जब वबाओं के साए, अज़ान दो
तूफ़ां को मोड़ने की तुवानाई इस में है
फिर बिज्लियां न बरसेंगी, फ़ैज़ान बरसेगा
हर रोशनी से बढ़ के उजाला अज़ां का है
रद्दे बला, बहारे अ़त़ा, नुस्ख़ए शिफ़ा
मुरझाई काएनात में आएगी ताज़गी
दुन्या मरीज़ हो तो दवाए अज़ान दो
गर्दिश कभी जो आंख दिखाए, अज़ान दो
बादल मुसीबतों का जो छाए, अज़ान दो
बे नूर है जहां, तो ज़ियाए अज़ान दो
हैं कितने फ़ैज़ इस में समाए, अज़ान दो
जब मुश्किलों की धूप सताए, अज़ान दो

येह रास्ता है क़हरो ग़ज़ब से नजात का चश्मे त़लब में अश्क सजाए अज़ान दो
तुम को अगर सुझाई न दे ज़िन्दगी की राह जब दौर मुश्किलात का आए, अज़ान दो
नग़मा हो साथ साथ दुरूदो सलाम का इश्क़े नबी जिगर में बसाए अज़ान दो
दरकार हैं फ़रीदी अगर मुस्कुराहटें तुम आह और फ़ुग़ां के बजाए, अज़ान दो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

ख़ुदाए पाक को राज़ी कर लीजिये

प्यारे इस्लामी भाइयो ! एक त़रफ़ कोरोना वायरस का ख़ौफ़, दूसरी त़रफ़ लॉक डाउन की आफ़त, ग़रीब हो या अमीर तक़रीबन सभी परेशानी से दो चार हो कर घबराहटो तश्वीश में हैं कि न जाने आगे क्या होगा, **अल्लाह** पाक हम सब पर अपना ख़ुसूसी फ़ज़्लो करम फ़रमाए, इस आफ़तो परेशानी के वक़्त में ज़िक्रे इलाही कर के अज़ानें दे कर, सलातो सलाम पढ़ कर, ख़ूब दिल से दुआएं मांग कर अपने रब्बे रह़ीमो करीम को राज़ी करने की कोशिश करें।

अज़ान की बरकत से सैलाब दूर हो गया (ह़िकायत)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के ह़वाले से लिखते हैं : एक मरतबा बग़दाद में सैलाब आ गया, क़रीब था कि ग़र्क़ हो जाता। इसी दौरान बा'ज़ नेक बन्दों ने ख़्वाब में देखा कि वोह दरियाए दिज्ला के किनारे खड़े हैं और कह रहे हैं : ''لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ बग़दाद ग़र्क़ हो गया''। उसी वक़्त दो शख़्स आए,

एक ने दूसरे से पूछा : तुझे किस चीज़ का हुक्म हुवा है ? कहा : मुझे बग़दाद को ग़र्क़ करने का हुक्म हुवा था मगर फिर मुझे मन्अ़ कर दिया गया। पूछा : क्यूं ? कहा : रात के फ़िरिश्तों ने **अल्लाह** पाक की बारगाह में अ़र्ज़ किया कि आज रात बग़दाद में नाहक़ 700 औ़रतों की इ़ज़्ज़त पर हाथ डाला गया है, जिस पर **अल्लाह** पाक ने ग़ज़ब फ़रमाया और मुझे बग़दाद को ग़र्क़ करने का हुक्म दिया लेकिन फिर सुब्ह़ के फ़िरिश्तों ने अ़र्ज़ किया कि आज सुब्ह़ बग़दाद में 700 अज़ान व इक़ामत हुई हैं। **अल्लाह** पाक ने इस की बरकत से मुआ़फ़ी अ़ता फ़रमा दी (या'नी इज्तिमाई अ़ज़ाब नहीं दिया गया)। फिर आंख खुली तो पानी उतर चुका था। (فیض القدیر، 1/327)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! रिवायत में है : जिस बस्ती में अज़ान दी जाए, **अल्लाह** पाक अपने अ़ज़ाब से उस दिन उसे अम्न देता है। (معجم کبیر، 1/257، حدیث:746)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में लिखते हैं : न ऊपर (या'नी आस्मान) से बलाएं आएंगी न नीचे (या'नी ज़मीन) से, न उन पर दुश्मन ह़ावी होगा। नीज़ ख़स्फ़ (या'नी ज़मीन में धंसने) और मस्ख़ (या'नी शक्लों के बदल जाने) और पथ्थर बरसाने वग़ैरा (अ़ज़ाबात) से भी मह़फ़ूज़ होंगे। (فیض القدیر، 1/326)

मिटा दे सारी ख़ताएं मेरी मिटा या रब बना दे नेक बना नेक दे बना या रब
बुराइयों पे पशेमां हूं रह़म फ़रमा दे है तेरे क़ह़र पे ह़ावी तेरी अ़ता या रब

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

नमाज़ भी पढ़ सकते हैं

प्यारे इस्लामी भाइयो ! फ़िक़्हे ह़नफ़ी की बड़ी क़ाबिले ए'तिमाद किताबों में है : वबा फैले या ज़ल्ज़ले आएं या दुश्मन का ख़ौफ़ हो या और कोई ख़ौफ़नाक मुआ़मला पाया जाए इन सब के लिये दो रक्अ़त नमाज़ मुस्तह़ब है। (فتاوی ہندیہ، 1/153، درمختار، 3/80، وغیرہما)

वबा के मौक़अ़ पर अज़ान देने के बारे में एक किताब लिखी

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने "वबा के मौक़अ़ पर अज़ान देने" के बारे में पूरा एक रिसाला बनाम "نَسِيْمُ الصَّبَا فِيْ اَنَّ الْاَذَانَ يُحَوِّلُ الْوَبَاءَ" या'नी बीमारियों को दफ़्अ़ करने के लिये अज़ान के बारे में सुब्ह़ की ख़ुश गवार हवा का बयान तह़रीर फ़रमाया है। (आह ! येह रिसाला बा'ज़ कुतुबे आ'ला ह़ज़रत की त़रह़ दस्त याब नहीं।)

अज़ान अम्नो सलामती का सबब है

सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने क़ब्र पर अज़ान देने के बारे में क़ुरआनो ह़दीस की रोशनी में पूरा एक रिसाला बनाम "اِيْذَانُ الْاَجْرِ فِيْ اَذَانِ الْقَبْرِ" लिखा है। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने अपने इस रिसाले में एक मक़ाम पर जो इर्शाद फ़रमाया इसे आसान अल्फ़ाज़ में पेश करता हूं : (क़ब्र पर अज़ान देने का) इन्कार करने वाले और इस पर ए'तिराज़ करने वाले कहते हैं कि अज़ान तो सिर्फ़ नमाज़ का ए'लान करने के लिये है, और यहां (या'नी क़ब्र पर) कौन सी नमाज़ है जिस के लिये अज़ान दी जा रही है ? येह जहालत इन्हीं को ज़ेब देती है वोह नहीं जानते कि अज़ान

में क्या क्या मक़ासिद और फ़ाएदे हैं, शरीअ़ते मुत़ह्हरा ने नमाज़ के सिवा किन किन मवाक़ेअ़ पर अज़ान मुस्तह़ब फ़रमाई है (जिन की तफ़्सील शुरूअ़ सफ़ह़ात में हो चुकी) । आप رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ इसी रिसाले के ख़ुत़्बे में इर्शाद फ़रमाते हैं : اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ جَعَلَ الْاَذَانَ عَلَمَ الْاِیْمَانِ وَسَبَبَ الْاَمَانِ وَسَکِیْنَۃَ الْجِنَانِ وَمُنْفَاۃَ الْاَحْزَانِ وَمَرْضَاۃَ الرَّحْمٰنِ या'नी तमाम ता'रीफ़ें उस **अल्लाह** पाक के लिये हैं जिस ने अज़ान को ईमान की अ़लामत और अम्नो सलामती का सबब, दिलों का सुकून और ग़मों को दूर करने वाला और अपनी रिज़ा का ज़रीआ़ बनाया है । (फ़तावा रज़विय्या, 5/653)

शैत़ान भाग जाता है

अल्लाह पाक की अ़त़ा से ग़ैब की ख़बरें देने वाले प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जब नमाज़ की अज़ान दी जाती है तो शैत़ान गूज़ मारता (या'नी हवा ख़ारिज करता हुवा) भागता है ताकि अज़ान न सुने । (بخاری،1/222،حدیث:608)

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : ख़्वाह नमाज़ में बुलाने के लिये (अज़ान) दी जाए या किसी और मक़्सद के लिये, जैसे बच्चे के कान में या बा'दे दफ़्न क़ब्र पर वग़ैरा । لِلصَّلٰوۃِ (या'नी नमाज़ के लिये) इस लिये फ़रमाया ताकि कोई अज़ान के लुग़वी मा'ना न समझ जाए । यहां (शैत़ान के) भागने के ज़ाहिरी मा'ना ही मुराद हैं और अज़ान में दफ़्ए़ शैत़ान की तासीर है इसी लिये त़ाऊ़न फैलने पर अज़ान कहलावते हैं कि येह वबा जिन्नात के असर से है । बच्चे के कान में अज़ान देते हैं कि इस की पैदाइश पर शैत़ान मौजूद होता है जिस की मार से बच्चा रोता है । दफ़्न के बा'द

क़ब्र के सिरहाने अज़ान दी जाती है क्यूं कि वोह मय्यित के इम्तिहान और शैतान के बहकाने का वक़्त है, इस की बरकत से शैतान भागेगा, नीज़ मय्यित के दिल को सुकून होगा, नए घर में दिल लग जाएगा, नकीरैन के सुवालात के जवाबात याद आ जाएंगे। (नीज़) गूज़ मारने (हवा ख़ारिज होने) से मुराद उस की इन्तिहाई ज़िल्लत और ख़ौफ़ है कि ऐसी हालत में डरने वाला गूज़ मारता हुवा ही भागा करता है। (मिरआत, 1/409)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

दिलों का चैन

''फ़तावा रज़विय्या'' में है : अज़ान दाफ़ेए वहशत व बाइसे इत्मीनाने ख़ातिर है कि वोह ज़िक्रे ख़ुदा है और **अल्लाह** पाक फ़रमाता है : اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَىٕنُّ الْقُلُوْبُ ﴿۲۸﴾ (پ13، الرعد:28)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : सुन लो **अल्लाह** की याद ही में दिलों का चैन है।

तो ज़िक्रे इलाही हमेशा हर जगह महबूब व मरग़ूब व मत़लूब व मन्दूब है। (या'नी **अल्लाह** पाक का ज़िक्र हर जगह हमेशा करना पसन्दीदा और अच्छा काम है) जिस से हरगिज़ मुमानअ़त नहीं हो सकती जब तक किसी ख़ुसूसिय्यते ख़ास्सा (या'नी ख़ास सूरत) में कोई नह्ये शरई न आई हो (या'नी शरीअ़त की त़रफ़ से मन्अ़ न फ़रमाया गया हो) और अज़ान भी क़त़्अ़न (या'नी बिल्कुल) ज़िक्रे ख़ुदा है फिर ख़ुदा जाने कि ज़िक्रे ख़ुदा से मुमानअ़त की वज्ह क्या है ? हमें हुक्म है कि हर संग (या'नी पथ्थर), दरख़्त के पास ज़िक्रे इलाही करें। (फ़तावा रज़विय्या, 5/667, 670)

वस्फ़ बयां करते हैं सारे, संगो शजर और चांद सितारे
तस्बीहे हर ख़ुश्को तर है या अल्लाहु या अल्लाह

ख़ूब ज़िक्रुल्लाह कीजिये

प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस बात में किसी मुसल्मान को शक नहीं हो सकता कि मुकम्मल अज़ान **अल्लाह** पाक और उस के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़िक्र पर मुश्तमिल है, येह बात साबित और तसलीम शुदा है, **अल्लाह** पाक अपने ज़िक्र के बारे में क़ुरआने करीम में इर्शाद फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًا ۙ (پ22، الاحزاب:41)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो **अल्लाह** को बहुत याद करो ।

सह़ाबी इब्ने सह़ाबी, जन्नती इब्ने जन्नती ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْه इस आयत के तह़्त फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक ने अपने बन्दों पर जो भी इ़बादत मुक़र्रर फ़रमाई है उस की कोई ह़द है कि इस ह़द तक करो और अगर कोई उ़ज़्र पाया जाए तो उस की छूट भी है कि न करो, सिवाए ज़िक्रुल्लाह के, क्यूं कि **अल्लाह** पाक के ज़िक्र की कोई ह़द ही नहीं है कि इतना करो इतना न करो । (**अल्लाह** पाक का ख़ूब ज़िक्र करो, सुब्ह़ो शाम करो, ख़ुश्की व तरी में करो, सिह़्ह़तो बीमारी की ह़ालत में करो, ए'लानिया और पोशीदा हर त़रह़ से करो ।) अ़ज़ीम ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते इमाम मुजाहिद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक का कसरत से ज़िक्र करने का मत़लब येह है कि तू **अल्लाह** पाक के ज़िक्र को कभी न भूले । (تفسیر بغوی، 3/460)

या इलाही दिखा हम को वोह दिन भी तू आबे ज़मज़म से कर के ह़रम में वुज़ू
बा अदब शौक़ से बैठ के क़िब्ला रू मिल के हम सब कहें यक ज़बां हू ब हू

अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

बेहतरीन दुआ

प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : كُلُّ دُعَاءٍ ذِكْرٌ وَكُلُّ ذِكْرٍ دُعَاءٌ ''या'नी हर दुआ ज़िक्र है और हर ज़िक्र दुआ है ।'' (مرقاۃ،5/135) यक़ीनन मुसीबतो परेशानी और सख़्त आफ़तो बीमारी के वक़्त **अल्लाह** पाक से दुआ मांगनी चाहिये ।

अज़ान के बा'द दुआ बहुत क़बूल होती है, लिहाज़ा मुसीबत ज़दा को चाहिये कि उस वक़्त दुआ मांगा करे । (मिरआत, 1/412) अज़ान ख़ुद दुआ बल्कि बेहतरीन दुआओं में से है कि वोह ज़िक्रे इलाही है और हर ज़िक्रे इलाही दुआ है जैसा कि ऊपर बयान हुवा लिहाज़ा कोरोना वायरस की जो आफ़तो वबा फैली हुई है, इस से नजात **अल्लाह** पाक की रह़मत से **अल्लाह** पाक के ज़िक्र से मिलेगी और **अल्लाह** पाक का ज़िक्र सब से बड़ी शै है जो इस आफ़त को दूर करेगी और इस से नजात दिलाएगी क्यूं कि अज़ान ज़िक्रे इलाही है और ज़िक्रे इलाही के बराबर ग़ज़ब व अ़ज़ाबे इलाही से नजात देने वाली, बला, ग़म व परेशानी की दफ़्अ़ करने वाली कोई चीज़ नहीं । (फ़तावा रज़विय्या, 24/181)

रह़मत की बरसात

ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब लोग किसी जगह जम्अ़ हो कर **अल्लाह** पाक का ज़िक्र करते हैं तो फ़िरिश्ते उन को ढांप लेते हैं और उन पर रह़मत छा जाती है और उन पर सकीना (या'नी चैन व इत्मीनान) उतरना शुरूअ़ हो जाता है । (مسلم،ص1111حدیث:6855)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! ऐसे तश्वीश नाक ह़ालात में कोरोना वायरस के सबब अम्वात की इत्तिलाआ़त आ रही हों और एक अ़जीब

घबराहट का सा माहौल हो अगर हमें **अल्लाह** पाक की रह़मत और सुकूनो चैन चाहिये तो येह **अल्लाह** पाक के ज़िक्र की बरकत से नसीब होगा और अज़ान **अल्लाह** पाक का ज़िक्र है। बड़ी ह़ैरत की बात है कि कोरोना वायरस से नजात के लिये अज़ान (या'नी **अल्लाह** पाक का ज़िक्र) सुन कर बजाए ख़ुश होने के बा'ज़ नादान मुसल्मान कहलाने वालों को ए'तिराज़ात सूझ रहे हैं, ह़ालां कि अज़ान देने में सिवाए इब्लीसे लईन (शैत़ान) के किसी का किसी भी त़रह़ का कुछ भी नुक़्सान नहीं, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : अज़ान मुसीबतों को दफ़्अ़ करती है। (मिरआत, 1/413)

अहले बैते अ़त़्हार की मह़ब्बत मेरी घुट्टी में है (ह़िकायत)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के लड़कपन में आप के शह़र में एक बार सख़्त वबा फैली, इस मौक़अ़ पर आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने हम उ़म्र बच्चों के साथ गलियों वग़ैरा में अहले बैते अत़्हार की शानो अ़ज़मत के वसीले से यूं एक अ़रबी शे'र पढ़ते जिसे दीगर बच्चे दोहराते.....

لِیْ خَمْسَةٌ اُطْفِیْ بِهَا حَرَّ الْوَبَاءِ الْحَاطِمَة اَلْمُصْطَفٰی وَالْمُرْتَضٰی وَابْنَاهُمَا وَالْفَاطِمَة

(या'नी मेरे लिये पांच (हस्तियां) हैं उन के ज़रीए तोड़ कर रख देने वाली वबा की गरमी बुझाता हूं, और वोह पांच (हस्तियां) येह हैं (1) ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (2) ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा رَضِیَ اللهُ عَنْه (3 व 4) इन के दोनों साह़िब ज़ादे इमामे ह़सन व इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا (5) और सय्यिदह फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا)

चौराहों, गलियों वग़ैरा पर वबा से नजात हासिल करने की निय्यत से अज़ानें देते, आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इर्शाद फ़रमाते हैं : बच्चों को इस का इस क़दर शौक़ था कि बहुत सारे बच्चे जम्अ़ हो जाते और गलियों में येह पढ़ते हुए जाते थे, اَلْحَمْدُلِلّٰه ! यूं **अल्लाह** पाक और उस के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्रे ख़ैर होता था इस की बरकत से अच्छा माहोल बन जाता था और اَلْحَمْدُلِلّٰه ! अहले बैते अत्हार की महब्बत हमारी घुट्टी में है। (सिल्सिला : दिलों की राहत, क़िस्त : 5, 6)

क्या बात है अमीरे अहले सुन्नत की

आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के वत्न के मश्हूर ख़ुश इल्हान ना'त ख़्वान "अलहाज सिद्दीक़ इस्माईल साहिब" का कहना है कि اَلْحَمْدُلِلّٰه ! मैं अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के लड़कपन में साथ होता था और हम सब मिल कर बादामी मस्जिद से पूरे अ़लाक़े का मज़्कूरा दुआ़इया शे'र पढ़ते हुए चक्कर लगाते और अज़ानें देते थे।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُلِلّٰه ! इतनी कम उ़म्री ही से आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का दीन की त़रफ़ रुज्हान था गोया शुरूअ़ ही से आप पर **अल्लाह** पाक और उस के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ास इ़नायात थीं। **अल्लाह** पाक की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

अल्लाह पाक के पसन्दीदा बन्दों का वसीला

फ़तावा रज़विय्या में मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه से वबा के दिनों में रात को गलियों में मिल कर येह शे'र पढ़ने के बारे में

सुवाल हुवा तो आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : मज़्मूने शे'र फ़ी नफ़्सिही ह़सन है और मह़बूबाने ख़ुदा से तवस्सुल मह़मूद। (या'नी येह शे'र अच्छा है और **अल्लाह** पाक के पसन्दीदा बन्दों के वसीले से दुआ़ करना भी अच्छा काम है।) (फ़तावा रज़विय्या, 5/179)

फ़ज़्ल कर रह़म कर तू अ़त़ा कर और मुआ़फ़ ऐ ख़ुदा हर ख़त़ा कर
वासित़ा पन्जतने पाक का है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

अज़ान के चन्द शर्ई मसाइल

(1) अज़ाने नमाज़ के इ़लावा और अज़ानों का भी जवाब दिया जाएगा। (2) حَيَّ عَلَى الصَّلٰوة दाह्नी त़रफ़ मुंह कर के कहे और حَيَّ عَلَى الْفَلَاح बाईं जानिब, अगर्चे अज़ान नमाज़ के लिये न हो बल्कि मसलन बच्चे के कान में या और किसी लिये कही येह फेरना फ़क़त़ मुंह का है, सारे बदन से न फिरे। (3) अज़ान के कलिमात ठहर ठहर कर कहे, اَللهُ اَكْبَر، اَللهُ اَكْبَر दोनों मिल कर एक कलिमा हैं, दोनों के बा'द सक्ता करे (या'नी ठहरे) दरमियान में नहीं और सक्ते की मिक़्दार येह है कि जवाब देने वाला, जवाब दे ले और सक्ते का तर्क मक्रूह है और ऐसी अज़ान का इआ़दा मुस्तह़ब है। (बहारे शरीअ़त, 1/469, ह़िस्सा : 3)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

वबा को दूर करने वाला एक और वज़ीफ़ा

इमाम इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : त़ाऊ़न वग़ैरा बलाओं को दूर करने वाली सब से बड़ी चीज़ों में से नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ना है। (بذل الماعون فی فضل الطاعون، ص333)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! अल्लाह पाक हम सब पर अपना ख़ुसूसी फ़ज़्लो करम फ़रमाए, हमें कोरोना वायरस समेत हर ज़मीनी, आस्मानी आफ़तो बला से महफ़ूज़ फ़रमा कर अपनी और अपने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की याद में मसरूफ़ रहने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए, कोरोना वायरस समेत दीगर आफ़तों बीमारियों से बचने के लिये दुरूदो सलाम और अज़ान का ख़ुसूसी एहतिमाम फ़रमाइये नीज़ हो सके तो अपने घर में सवा लाख बार ''یَا سَلَامُ'' का विर्द भी कीजिये, **अल्लाह** पाक की रह़मत शामिले ह़ाल रही तो कोरोना वायरस समेत दीगर बीमारियों से भी ह़िफ़ाज़त होगी ।

गुनाहों से सच्ची तौबा

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह पाक ने तौबा ऐसी बेहतरीन शै बनाई है कि बा'ज़ अवक़ात गुनाहों पर शरमिन्दगी व तौबा बीमारियों और परेशानियों से नजात का सबब बन जाती है, मन्क़ूल है : 449 हिजरी में आज़र बाएजान, वासित़ और कूफ़ा में वबा फैली जिस से बहुत बड़ी ता'दाद मुतअस्सिर हुई और लोग परेशान हो गए, **अल्लाह** पाक की बारगाह में सब ने तौबा की, शराबों को बहा दिया, गाने बाजों के आलात तोड़ डाले । (455 / 3، شذرات الذهب) कोरोना वायरस के ख़ौफ़ ही से नहीं बल्कि सिर्फ़ रिज़ाए इलाही के लिये सच्चे दिल से अपने सारे गुनाहों से तौबा कर लीजिये, अगर आप के ज़िम्मे क़ज़ा नमाज़ें बाक़ी हैं तो जल्द से जल्द इन को अदा कर लीजिये, फ़र्ज़ रोज़े क़ज़ा बाक़ी हैं तो वोह भी

रख लीजिये, ज़कात देने में कोताही हुई है तो अपनी पूरी ज़कात शरई तरीक़ए कार के मुताबिक़ दे दीजिये, नीज़ अगर किसी का कोई हक़ दबाया है तो वोह वापस कर दीजिये, किसी का दिल दुखाया या मारा या डांटा है तो हाथ जोड़ कर मुआफ़ी मांग कर उस को राज़ी कर लीजिये, याद रखिये ! मौत सिर्फ़ कोरोना वायरस ही के सबब से तो नहीं आएगी, आख़िर हमें एक न एक दिन मरना तो है ही ? अगर **अल्लाह** पाक और उस के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नाराज़ हो गए तो हमारा क्या बनेगा ? **अल्लाह** पाक हमें बा अमल आशिक़ाने रसूल की सोहबत नसीब करे और ख़ूब सुन्नतों पर चलना नसीब फ़रमाए ।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

तेरी सुन्नतों पे चल कर मेरी रूह जब निकल कर चले तू गले लगाना मदनी मदीने वाले

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के कलाम से मुन्तख़ब अश्आ़र

''कोरोना'' से हम को बचा या इलाही परे हो येह हम से बला या इलाही
''कोरोना'' में जो मुब्तला हैं उन्हें तू करम से अ़ता कर शिफ़ा या इलाही
''कोरोना'' के बदले गुनाहों का डर दे नदामत से हम को रुला या इलाही
गुनाहों से तौबा की तौफ़ीक़ दे दे हमें नेक बन्दा बना या इलाही
रहे ख़ौफ़ हर दम बुरे ख़ातिमे का हो ईमान पर ख़ातिमा या इलाही

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

कोरोना वायरस और दीगर आफ़तों से हिफ़ाज़त के लिये येह नक़्श अपने घर के **दरवाज़े** पर लगा लीजिये।

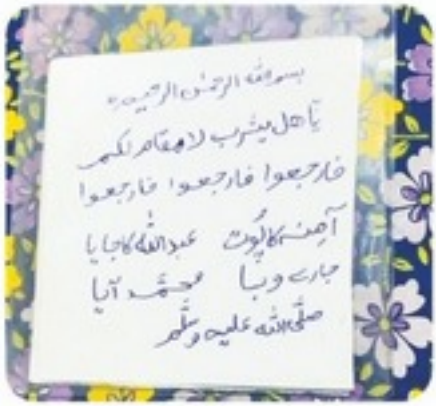

नोट : नक़्श लिखते हुए गोल दाएरे वाले हुरूफ़ खुले रहें और नक़्श प्लास्टिक कोटिंग कर के लटकाएं।

978-969-722-154-7
01082173

فیضانِ مدینہ، محلہ سوداگران، پرانی سبزی منڈی کراچی
UAN +92 21 111 25 26 92 0313-1139278
www.maktabatulmadinah.com / www.dawateislami.net
feedback@maktabatulmadinah.com / ilmia@dawateislami.net